CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

पावक में कनक-सदृश तप कर,
वीरत्व लिए कुछ और प्रखर,
नस-नस में तेज-प्रवाह लिये,
कुछ और नया उत्साह लिये।
सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं। -------@ रामधारी सिंह दिनकर

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आदिकाल

आदिकाल का नामकरण

- चारण काल – ग्रीयर्सन
- प्रारम्भिक काल- मिश्रबंधुओं
- वीरगाथा काल – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- विजवपन काल – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
- सिद्ध सामंत काल – राहुल सांकृत्यायन
- वीरकाल – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- संधि एवं चारण काल - डॉ० रामकुमार वर्मा
- आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विदी
- आधार काल – सुमन राजे

आदिकाल का समय सीमा

- मिश्र बंधु

  प्रारम्भिक काल – 700 वि ० – 1444 वि ०
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

  वीरगाथाकाल – 1050 वि०सं० – 1375वि०सं०
- डॉ० राम कुमार वर्मा

  संधि एवं चरण काल - वि०सं० 700 से 1375 वि०सं०
- गणपतिचंद्र गुप्त

  आदिकाल सन् 1184 से 1350 तक
- डॉ० नगेन्द्र

  आदिकाल 650 इसवि से 1350 ईस्वी

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : आदिकाल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल को चार प्रकरण में बाँटा है-

- प्रकरण 1 - सामान्य परिचय
- प्रकरण 2 - अपभ्रंश काव्य (सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य)
- प्रकरण 3 - देशभाषा काव्य/वीरगाथाकाल (रासो साहित्य)
- प्रकरण 4 – फुटकल रचनाएं (खुसरो और विद्यापति)

आदिकाल का साहित्य

❖ आदिकाल में मुख्य रूप से दो प्रकार की रचनाएं पाई जाती है।

1. अपभ्रंश काव्य - विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका
2. देशभाषा काव्य - खुमानरासो, बीसलदेवरासो, पृथ्वीराजरासो, जयचंद्रप्रकाश, जयमयंक जसचन्द्रिका, परमालरासो, खुसरो की पहेलियाँ और विद्यापति पदावली।

आदिकालीन साहित्य का वर्ग

- अपभ्रंश साहित्य
- सिद्ध साहित्य
- जैन साहित्य
- नाथ साहित्य
- रासो साहित्य
- लौकिक साहित्य
- गद्द साहित्य

अपभ्रंश साहित्य

- अपभ्रंश को शुक्ल जी ने दूसरे प्रकरण में रखा है।
- डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपभ्रंश भाषा के प्रथम कवि स्वयंभू को हिन्दी का प्रथमकवि माना है।
- स्वयंभू आठवीं शती (783 ई०) के आसपास विद्यमान थे।
- स्वयंभू को ही जैन परम्परा का भी प्रथम कवि माना जाता है।
- स्वयंभू के तीन ग्रन्थ बताये जाते हैं- (1) पउम चरिठ, (2) रिट्द्णेमि चरिउ तथा(3) स्वयंभू छंद।
- स्वयंभू को अपभ्रंश भाषा का वाल्मीकि तथा व्यास कहा जाता है।
- स्वयंभू ने अपनी भाषा को 'देशी भाषा' कहा है।

- स्वयंभू के 'पउमचरिउ' को उसके पुत्र त्रिभुवन ने पूरा किया।
- पउमचरिउ' में राम का चरित्र विस्तार से वर्णित है।
- शिवसिंह सेंगर ने अपने ग्रन्थ 'शिवसिंह सरोज' में किसी पुरानी अनुश्रुति के आधार पर सातवीं शताब्दी के पुष्य या पुंड कवि को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- "यह पुष्य सम्भवतः अपभ्रंश का प्रसिद्ध कवि पुष्यदंत है जिसका आविर्भाव 9वीं शती में हुआ।
- "सर्वमान्य धारणा है कि पुष्यदंत का आविर्भाव 972 ई9 (10वीं शती) में हुआ।
- पुष्पदंत की प्रमुख रचनाएँ हैं- (1) तिरसठी महापुरिस गुणालंकार, (2) णयकुमारचरिउ तथा (3) जसहर चरिउ।पुष्यदंत के 'तिरसठी महापुरिस गुणालंकार' को ही महापुराण नाम से जाना जाता है।
- महापुराण में 63 महापुरुषों का जीवन चरित वर्णित है।
- पुष्यदंत ने अपने चरित काव्यों में चौपाई छंद का प्रयोग किया है।
- पुष्यदंत ने साहित्य की रचना विशुद्ध धार्मिक भाव से किया है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- अपभ्रंश और अवहट्ठ में चउपई (चौपाई) 15 मात्राओं का छन्द था।
- पुष्यदंत को हिन्दी का भवभूति कहा जाता है।
- शिवसिंह सेंगर ने पुष्य कवि को 'भाखा की जड़' कहा है।
- पुष्यदंत ने स्वयं को 'अभिमान मेरु', 'काव्यरत्नाकर', 'कविकुल तिलक' आदि उपाधियों से विभूषित किया है।
- हरिषेण ने अपनी 'धम्म परीक्खा' में अपभ्रंश के तीन कवि माने हैं- (1) चतुर्मुख,(2) स्वयंभू और (3) पुष्यदंत ।
- स्वयंभू ने चतुर्मुख को पद्धड़िया बंध का प्रवर्तक तथा सर्वश्रेष्ठ कवि कहा है।
- पद्धरी 16 मात्रा का मात्रिक छंद है। इस छंद के नाम पर इस पद्धति पर लिखे जानेवाले काव्यों को पद्धड़िया बंध कहा गया है।
- पुष्यदंत मान्यखेट के प्रतापी राजा कर्ण के महामात्य भीम के सभा-कवि थे।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- धनपाल वाक्यपतिराज मुंज के कवि सभा रत्न थे जिन्हें मुंज ने 'नरस्वती' की उपाधि दी थी।
- अपभ्रंश के तीसरे प्रमुख कवि धनपाल ने दसवीं शती में 'भविसयत्तकहा' की रचना की।
- 12वीं शताब्दी में जिनदत्त सूरी द्वारा लिखित ग्रन्थ 'उपदेश रसायन रास' (1114 ई०) को जैन रास काव्य परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।
- 'उपदेश रसायन रास' अपभ्रंश भाषा का प्रथम रास काव्य है।
- रास काव्य परम्परा का हिन्दी में प्रवर्तन करने का श्रेय 'भरतेश्वर बाहुबली रास' (1184 ई०) के रचयिता श्री शालिभद्र सूरी को है।
- 'उपदेश रसायनरास' 80 पद्मों का नृत्य गीत रासलीला काव्य है।
- रास काव्य परम्परा का हिन्दी में प्रवर्तन करने का श्रेय 'भरतेश्वर बाहुबली रास' (1184 ई०) के रचयिता श्री शालिभद्र सूरी को है।
- 'उपदेश रसायनरास' 80 पद्मों का नृत्य गीत रासलीला काव्य है।
- अब्दुल रहमान द्वारा लिखित 'संदेश रासक' पहला धर्मेतर रास ग्रन्थ है।
- देशी भाषा में किसी मुसलमान द्वारा लिखित प्रथम काव्य ग्रन्थ 'संदेशरासक' है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- संदेशरासक एक खण्ड काव्य है जिसमें विक्रमपुर की एक वियोगिनी के विरह को कथा वर्णित है।
- विद्वानों ने उसका समय बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध और 13वीं शती का आरम्भ माना है।
- मुनि रामसिंह जैन साहित्य में सर्वश्रेष्ठ रहस्यवादी कवि कहे जाते हैं।
- डॉ० होरालाल मुनि रामसिंह का आविर्भाव-काल सं० 1057 के लगभग मानते हैं।
- मुनिराम सिंह ने 'पाहड दोहा' की रचना की।
- अपभ्रंश भाषा में दोहा काव्य का आरम्भ छठी शताब्दी के कवि जोइन्दु से माना जाता है।
- जोइन्दु ने दो पुस्तकों की रचना की है- जार्ज ग्रियर्सन ने आदिकाल के अन्तर्गत नौ कवियों को शामिल किया-पुष्य कवि,(1) परमात्म प्रकाश और (2), योगसार।
- खुमान सिंह, केदार, कुमार पाल, अनन्यदास, चन्द्र, जगनिक, शार्ङ्गधर एवं जोधराज ।
- मिश्र बन्धुओं ने 'मिश्र बन्धु-विनोद' के प्रथम संस्करण में 'आरम्भिक काल' (700-1444 वि०) के अन्तर्गत 19 कवियों को स्थान दिया है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र बन्धु विनोद' के अगले संस्करणों में नाथपंथियों और सिद्धों को सम्मिलित करते हुए इस काल में कवियों की संख्या 75 तक पहुँचा दी।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में आदिकालीन रचनाओं को दो वर्गों में विभक्त किया है- (1) अपभ्रंश और (2) देशभाषा (बोलचाल) की रचनाएँ।
- आचार्य शुक्ल ने निम्नांकित 12 रचनाओं को ही साहित्य में स्थान दिया

(क) अपभ्रंश की रचनाएँ- (1) विजयपाल रासो, (2) हम्मीर रासो, (3) कीर्तिलता और (4) कीर्ति पताका।

(ख) 'देशभाषा काव्य' की रचनाएँ- (1) खुमान रासो, (2) बीसलदेव रासो, (3) पृथ्वीराज रासो, (4) जयचन्द्र प्रकाश, (5) जयमयंक जस चन्द्रिका, (6)परमाल रासो (आल्हा का मूल रूप), (7) खुसरो की पहेलियाँ (8) विद्यापति पदावली

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल के अन्तर्गत नौ कवियों को शामिल किया है।
- हेमचन्द्र गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह और उनके भतीजे कुमार पाल के राजदरबार में रहते थे।
- आचार्य के व्याकरण का नाम 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' था।
- हेमचन्द्र का व्याकरण 'सिद्ध हेम' नाम से प्रसिद्ध हुआ।'सिद्ध हेम' में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का समावेश किया गया है।
- हेमचन्द्र प्रसिद्ध जैन आचार्य थे और इनका जन्म 1088 ई० में हुआ
- ।हेमचन्द्र के अन्य पुस्तकों का नाम निम्न है 'कुमार पाल चरित्र', 'योगशास्त्र', 'प्राकृत व्याकरण', 'छन्दोनुशासन' और 'देशी नाममाला कोष'।
- हेमचन्द्र को प्राकृत का पाणिनी माना जाता है।
- अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचन्द्र ने भट्टी के समान एक 'द्वयाश्रय काव्य' की भी रचना की है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- सोमप्रभ सूरी गुजरात के एक प्रसिद्ध जैन साधु थे जिनका आविर्भाव 1252 वि०स०में माना जाता है।
- सोमप्रभ सूरी ने 'कुमारपाल प्रतिबोध' (1241 वि०सं०) नाम एक गद्य-पद्य मय संस्कृत-प्राकृत काव्य लिखा।
- जैनाचार्य मेरुतुंग ने संवत् 1361 में 'प्रबन्धचिन्तामणि' नामक एक ग्रन्थ की रचना संस्कृत भाषा में की।
- 'प्रबन्ध चिन्तामणि' में कुछ दोहे मालवा नरेश राजा भोज के चाचा मुंज के कहे हुएहैं।
- प्रबन्ध-चिन्तामणि' में 'दूहा विद्या' में विवाद करने वाले दो चारणों की कथा आई है इसीलिए अपभ्रंश काव्य को 'दूहा विद्या' भी कहा जाने लगा।
- अपभ्रंश से पूर्व दोहा का प्रयोग नहीं होता था।
- लक्ष्मीधर ने 14वीं शताब्दी के अन्त में 'प्राकृत पैंगलम' नामक एक ग्रन्थ का संग्रह किया।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- प्राकृत पैंगलम्' में विद्याधर, शार्ङ्गधर, जज्जल, बब्बर आदि कवियों की रचनाओं को संकलित किया गया है।
- 'प्राकृत पैंगलम' में प्राकृत और अपभ्रंश छन्दों की विवेचना की गई है।
- प्राकृत पैंगलम' को 'प्राकृत पिंगल सूत्र' भी कहा जाता है।
- 'प्राकृत पैंगलम्' की टीका बंशीधर नामक किसी विद्वान ने लिखा है।
- शार्ङ्गधर एक अच्छे कवि और सूत्रकार थे।
- शार्ङ्गधर ने 'शार्ङ्गधर पद्धति' के नाम से एक सुभाषित संग्रह बनाया।
- 'शार्ङ्गधर पद्धति' में बहुत से शाबर मंत्र और भाषा चित्र-काव्य भी दिया गया है।
- आचार्य शुक्ल ने 'प्राकृत पैंगलम्' के कुछ छंद के आधार पर 'हम्मीररासो' ग्रन्थ केअस्तित्व की कल्पना की जिसका रचनाकार शार्ङ्गधर को बताया।
- राहुल सांकृत्यायन ने जज्जल नामक किसी कवि को इसका रर्चयिता घोषित किया।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि 'हम्मीर' शब्द अमीर का विकृत रूप है, जो किसी पात्र का न होकर एक विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- शिवसिंह सेंगर के अनुसार चंद की औलाद में शार्ङ्गधर कबि हुए थे, जिन्होंने हम्मीर गैरा और हम्मीर काव्य भाषा में बनाया था।
- शार्ङ्गधर कृत 'शार्ङ्गधर पद्धति' संस्कृत भाषा में लिखा एक पद्यकोष है किन्तु बीच-बीच में देशभाषा के वाक्य भी आये हैं।
- श्रीमल्लदेव राजा की प्रशंसा में 'शार्ङ्गधर पद्धति' में श्रीकंठ पण्डित का संगृहीत यह श्लोक उल्लेख योग्य है-

नूनं बादलं छाइ खेह पसरी निःश्राण शब्दः खरः।
शत्रु पाड़ि लुटालि तोड़ हसिनौं एवं भणन्त्युद्भटाः॥
झूठे गर्वभरा मघालि सहसों रे कंत मेरे कहे।
कंठे पाग निवेश जाह शरणं श्रीमल्लदेवं विभुम्॥

डॉ० बच्चन सिंह ने अनुमान व्यक्त किया है कि शार्ङ्गधर कुंडलिया छन्द के प्रथम प्रयोक्ता हैं।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का